CURRENT AFFAIRS
Yojna IAS
C-32 Noida Sector-02
Uttar Pardesh (201301)
Contact No. +8595907569

Date – 25 June 2022

बेदती-वरदा परियोजना

- कर्नाटक में दो पर्यावरण समूहों ने बेदाती और वरदा नदी-जोड़ने की परियोजना की आलोचना करते हुए इसे अवैज्ञानिक और जनता के पैसे की बर्बादी बताया है।

बेदाती-वरदा परियोजना:

- पेयजल की आपूर्ति के लिए बेदती-वरदा परियोजना की परिकल्पना वर्ष 1992 में की गई थी।
- इस योजना का उद्देश्य अरब सागर की ओर पश्चिम की ओर बहने वाली नदी बेदाती को तुंगभद्रा नदी की एक सहायक नदी वरदा से जोड़ना है, जो कृष्णा नदी में मिलती है और बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

- गडग जिले के हिरवदत्ती में एक विशाल बांध बनाया जाएगा।
- उत्तर कन्नड़ जिले के सिरसी के मेनसागोडा में पट्टानहल्ला नदी पर दूसरा बांध बनाया जाएगा।
- दोनों बांध सुरंगों के जरिए वर्दा तक पानी पहुंचाएंगे।
- पानी 88 किमी के लिए केंगरे और फिर हक्कालुमाने तक पहुंच जाएगा। की सुरंग से नीचे बहेगी, जहां यह वरदा में शामिल होगी।
- इस प्रकार परियोजना में उत्तर कन्नड़ जिले के सिरसी-येलापुरा क्षेत्र से रायचूर, गडग और कोप्पल जिलों के शुष्क क्षेत्रों में पानी ले जाने की परिकल्पना की गई है।
- बेदाती और वरदा नदियों की पट्टनहल्ला और शाल्मलाहल्ला सहायक नदियों से कुल 302 मिलियन क्यूबिक मीटर पानी निकाला जाएगा, जबकि 222 मिलियन क्यूबिक मीटर बेदाती नदी के सामने सुरेमाने बैराज से निकाला जाएगा।
- परियोजना को गडग तक पानी खींचने के लिए 61 मेगावाट बिजली की आवश्यकता होगी। इसके बाद भी पानी गडग तक पहुंचेगा या नहीं, इसका पता नहीं है।

परियोजना से संबंधित मुद्दे:

रूट बदलने में दिक्कत :

- पश्चिम की ओर बहने वाली नदी को पूर्व की ओर प्रवाहित करना एक कठिन कार्य है।

वर्षा जल पर निर्भर नदियाँ:

- गर्मी की शुरुआत में बेदती और वरदा नदियां सूखने लगती हैं।
- यह एक दुखद विडंबना है कि सरकार द्वारा नियुक्त वैज्ञानिक इन नदियों को पीने का पानी उपलब्ध कराने के बहाने आपस में जोड़ने की योजना बना रहे हैं, यह जानते हुए कि ये पूरे साल नहीं बहती हैं।
- उचित परियोजना रिपोर्ट का अभाव:
- सिंचाई विभाग द्वारा तैयार की गई विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) सटीक नहीं है क्योंकि यह पानी की उपलब्धता का आकलन नहीं करती है और बेदाती-अघानाशिनी

YOJNA IAS

और वर्दा नदियों के अंतर्संबंध पर राष्ट्रीय जल विकास एजेंसी (एनडब्ल्यूडीए) को बिना उद्धृत किए तैयार किया गया था। रिपोर्ट का अवलोकन।

पर्यावरणीय प्रभाव:

- 500 एकड़ से अधिक जंगल नष्ट हो जाएगा। अंतत: इसका परिणाम यह होगा कि पानी की भी भारी किल्लत होगी।
- इस परियोजना से वनस्पतियों और जीवों को भी नुकसान होगा।
- प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ द्वारा बेदाती घाटी को एक सक्रिय जैव विविधता क्षेत्र के रूप में नामित किया गया है।
- यह क्षेत्र 1,741 प्रकार के फूलों के पौधों के साथ-साथ पक्षियों और जानवरों की 420 प्रजातियों का घर है।
- नदी के साथ आने वाले पोषक तत्व विशेष रूप से डेडी में बेदती के मुहाने पर मछली के भंडार को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं।
- नदी घाटी लगभग 35 विभिन्न पशु प्रजातियों के लिए एक गलियारे के रूप में कार्य करती है। मुहाना में बेदाती को गंगावली के नाम से जाना जाता है।

हजारों लोगों की जिंदगी प्रभावित:

- बेदाती और वरदा नदियों के किनारे मछली पकड़ने वाले समुदायों के अलावा, पश्चिमी घाट की तलहटी में मालेनाडु क्षेत्र हजारों किसानों के लिए आजीविका का स्रोत है।

स्वदीप कुमार

स्नेक आइलैंड: काला सागर

- यूक्रेन ने काला सागर में एक भूमि द्वीप पर हवाई हमलों में रूसी सेना को गंभीर क्षति पहुंचाई है, जिसे 'स्नेक आइलैंड' भी कहा जाता है।
- माना जाता है कि इस द्वीप पर हमला पश्चिम द्वारा यूक्रेन को दी गई मिसाइलों का उपयोग करके दूसरी बड़ी सैन्य सफलता है।

स्नेक द्वीप:

- लैंड आइलैंड, जिसे स्नेक या सर्पेंट आइलैंड के नाम से भी जाना जाता है, चट्टान का एक छोटा टुकड़ा है जिसका आकार 700 मीटर से कम है, जिसे एक्स-आकार के रूप में वर्णित किया गया है।
- यह काला सागर में तट से 35 किमी दूर है। यह डेन्यूब के मुहाने के पूर्व में और ओडेसा के बंदरगाह शहर के लगभग दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।
- वोल्गा के बाद डेन्यूब यूरोप की दूसरी सबसे लंबी नदी है। यह पश्चिमी जर्मनी के ब्लैक फॉरेस्ट पर्वत से निकलती है और लगभग 2,850 किमी की दूरी तय करती है। यह काला सागर पर अपने मुहाने तक बहती है।
- इस द्वीप को मानचित्र पर 'विलेज ऑफ बाइल' द्वारा चिह्नित किया गया है, यह यूक्रेन के अंतर्गत आता है।

काला सागर:

आस-पास के क्षेत्र:

- काला सागर उत्तर और उत्तर पश्चिम में यूक्रेन, पूर्व में रूस और जॉर्जिया, दक्षिण में तुर्की और पश्चिम में बुल्गारिया और रोमानिया से घिरा है।

जलडमरूमध्य:

- काला सागर बोस्फोरस से मर्मारा सागर और एजियन सागर से डार्डनेल्स से जुड़ता है, जो परंपरागत रूप से यूरोप के लिए रूस का गर्म पानी का प्रवेश द्वार रहा है।
- काला सागर भी केर्च जलडमरूमध्य द्वारा आज़ोव सागर से जुड़ा हुआ है।

रूस के लिए महत्व:

सामरिक मध्यवर्ती क्षेत्र / बफर:

- काला सागर भूमध्य सागर के लिए एक मील का पत्थर है और साथ ही नाटो देशों और रूस के बीच एक रणनीतिक बफर है।

भूस्थैतिक महत्व:

- काला सागर क्षेत्र का प्रभुत्व मास्को के लिए एक भू-रणनीतिक अनिवार्यता है, (भूमध्यसागर में रूसी शक्ति के प्रभाव और दक्षिणी यूरोप के प्रमुख बाजारों के लिए एक आर्थिक प्रवेश द्वार को सुरक्षित करने के लिए दोनों)।
- रूस 2014 में क्रीमिया संकट के बाद से काला सागर पर पूर्ण नियंत्रण हासिल करने की कोशिश कर रहा है।
- काला सागर और रूस और क्रीमिया को जोड़ने वाले भूमि पुल पर नियंत्रण वर्तमान संघर्ष में रूस का मुख्य लक्ष्य रहा है।
- काला सागर तक यूक्रेन की पहुंच को कम करने से यह एक भूमि से घिरे देश में बदल जाएगा और इसके रसद व्यापार के लिए एक गंभीर झटका होगा।

स्वदीप कुमार